पुस्तक अंश

चलते तो अच्छा था!

असगर वज़ाहत

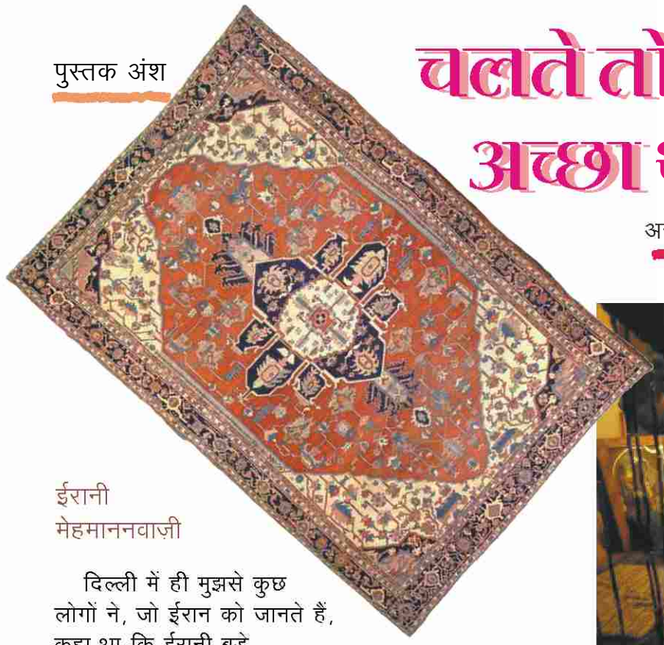

ईरानी मेहमाननवाज़ी

दिल्ली में ही मुझसे कुछ लोगों ने, जो ईरान को जानते हैं, कहा था कि ईरानी बड़े मेहमाननवाज़्ा होते हैं। यहाँ सड़कों पर घूमते हुए भी उसका पता चल जाता है।

जैसे, बड़े और सुर्ख अनार यहाँ देखे वैसे दुनिया में और कहीं नहीं नज़र आते। एक दिन सड़क के किनारे बनी एक दुकान से अनार का शर्बत पिया। शर्तिया इतना अच्छा अनार का शर्बत जीवन में पहली बार पिया था। पैसे देने के बाद लगा कि एक गिलास और पीना चाहिए। मैंने दुकानदार से एक गिलास और देने के बारे में कहा तो वह समझा कि मैं एक गिलास का दाम देकर दो गिलास पीना चाहता हूँ। मैंने समझाना चाहा पर वह नहीं समझ पा रहा था। इतने में एक पढ़ा-लिखा युवा ईरानी आया। वह अँग्रेज़ी जानता था। उसने मेरी मदद की। यह जानने के बाद कि मैं भारतीय हूँ उसने मेरे पैसे भी दे दिए और कहा, "यू आर अवर गेस्ट।" (आप हमारे मेहमान हैं)। यह एक-दो बार टैक्सियों में हुआ।

सहयात्रियों को पता चला कि मैं भारतीय हूँ तो उन्होंने टैक्सीवाले को मेरा किराया भी दे दिया। एक बार तेहरान से कुम जा रहा था तो लोगों ने बस का किराया ही दे दिया।

ईरान-अज़रबाईजान के बॉर्डर पर पड़नेवाले कस्बे में ईरान का नक्शा खरीदा तो दुकानदार ने यह जानने के बाद पैसे लौटा दिए कि मैं भारतीय हूँ। चाय-वाय पिला देना तो मामूली बात थी।

यह है ईरान में भारतीय होने का अर्थ।...

खुरचन

.....खाना तैयार हो गया। मेज़ पर लगाया गया। लिविंग रूम की बत्तियाँ किसी सूरजमुखी के फूल की तरह खिल गईं। सलाद, पनीर, रोटी, चिकन पुलाव, चिकन कोरमा और कई तरह के मुरब्बे। चिकन बिरयानी के ऊपर खुरचन देखकर मुझे कुछ हैरत हुई। वजह यह कि लखनऊ में जब बिरयानी पकाई जाती है तो खुरचन बन जाए इसका खास ख्याल रखा जाता है। मुझे लगा यह परम्परा भी

ईरान की है। खुरचन से मतलब पतीली में बिरयानी की वह अन्तिम तह है जिसे खुरचकर निकाला जाता है। चावल गलने के साथ तल भी जाते हैं और वे आपस में मिलकर एक मोटी परत जैसी बना लेते हैं। खुरचन को श्रेष्ठ माना जाता है इसलिए उसे पुलाव या बिरयानी की प्लेट में चावलों के ऊपर सबसे ऊपर रखा जाता है और मेहमानों को खुरचन विशेष आग्रह के साथ दी जाती है। यहाँ खुरचन थी पर मेहमान के लिए विशेष आग्रह नहीं था इसलिए मैं स्वयं ही खाने के साथ न्याय करने लगा।

तासीरे आब

....दो बजे आस्त्रा के बस अड्डे पहुँच गया। टिकट लेने की कोशिश की तो पता लगा अभी नहीं मिलेगा। वेटिंग हॉल में बैठ गया। पास की बेंचों पर एक मोटे से बूढ़े व्यक्ति, उनके साथ उनकी पत्नी और दो लड़कियाँ बैठी थीं। बूढ़े व्यक्ति से परिचय हुआ। इकराम नाम बताया। मैंने अपने बारे में बताया। कहानियों की किताब दी। पता चला बूढ़े पहले बस ड्राइवर थे अब रिटायर हो चुके हैं और तबरेज़ में रहते हैं। मैंने

इकराम से पूछा कि तबरेज़ में मैं किसी अच्छे और सस्ते मेहमानपिज़ीर (मुसाफिरखाने) में ठहरना चाहता हूँ। उन्होंने पक्का विश्वास दिलाया कि वे सब कर देंगे। कुछ देर बाद उनकी लड़की सबके लिए जूस खरीदकर लाई और मुझे भी दिया। अब इकराम से नहीं उनके परिवार से मेरी बात होने लगी। टूटी-फूटी फारसी काम आने लगी। कहीं-कहीं गाड़ी अटक भी जाती थी। इकराम की पत्नी और लड़कियाँ हिन्दी फिल्मों के बारे में बताने लगीं। उनकी पत्नी ने हाथ की भंगिमा से नृत्य की मुद्रा बनाई और कहा कि हिन्दी फिल्मों में नायिकाएँ "हिजाब" नहीं करतीं और बहुत सुन्दर लगती हैं। उन्होंने अपने सिर पर ओढ़े गए हिजाब पर हाथ लगाकर ज़ाहिर किया कि यह उन्हें अच्छा नहीं लगता; पर मजबूरी है। बातें फिल्मों पर होने लगीं। उनकी एक लड़की ने पूछा कि भारतीय अभिनेत्रियों के बाल इतने लम्बे और खूबसूरत कैसे होते हैं? मैं, ज़ाहिर है, इस क्षेत्र का जानकार नहीं हूँ लेकिन कोई न कोई जवाब तो देना ही था। मैंने कहा, पानी के प्रभाव के कारण। लड़की को यकीन हो गया।

बोली, "तासीरे आब (पानी का जलवा)।" मैंने कहा, "बेशक।" फिर शाहरुख खान वगैरा के बारे में बात होने लगी। मुझे लगा कि देखो भारत ने और कुछ किया हो या न लेकिन फिल्म उद्योग के ज़रिए तो नाम कमाया ही है। आस्त्रा की बाज़ार में भी मैंने हिन्दी फिल्मों की सी.डी. बिकते हुए देखी थीं।

ईरान के गिरफ्तार

रातभर बस की यात्रा करता सुबह मशहद से तेहरान पहुँचा। पूरा देश घूमने और हर शहर में बेरोकटोक फोटोग्राफी करते हुए मैंने सोचा कि यार, तेहरान में मैंने कैमरा क्यों न निकाला। क्यों मैं डराने से डर गया कि तेहरान में फोटोग्राफी खतरनाक हो सकती है। बताया गया था कि बी.बी.सी के एक संवाददाता का पुलिस ने न सिर्फ कैमरा छीन लिया था बल्कि उसे गिरफ्तार भी कर लिया था। उसी दिन रात में उसे वापस जाना था। बड़ी हाय-तौबा के बाद वह छोड़ा गया था लेकिन उसका कैमरा उसे नहीं दिया गया था। ये सब हुआ होगा लेकिन मेरे साथ पूरे देश में कुछ नहीं हुआ।

तेहरान शहर के चित्र मेरे पास नहीं थे। बस अड्डे से मैट्रो ली। शहर के केन्द्र में आ गया। यहाँ मैंने अमेरिकन दूतावास की वह इमारत देखी थी जो एक समय में विश्व का केन्द्र रह चुकी है। उस इमारत की चौहद्दी पर अमेरिका विरोधी नारे लिखे हैं। ये इतने उत्तेजक नारे हैं कि इनका चित्र लेने से मैं अपने को रोक नहीं सका। बड़े आराम से कैमरा निकाला और इन नारों के चित्र खींचने लगा। पीठ पर तीस-पैंतीस किलो का बैग था। हाथ में कैमरा था और मैं आगे बढ़ रहा था। कहीं कोई अच्छी इमारत नज़र आई तो यह सोचकर तस्वीर खींच ली कि यार भारत में तो लोग जानते ही नहीं कि तेहरान कैसा लगता है। मैं अपनी धुन में चला जा रहा था। हाथ में कैमरा था। अचानक किस तरफ से तीन पुलिसवाले जो कमांडो जैसे लग रहे थे आए। एक ने मेरे हाथ से कैमरा छीन लिया। दूसरे ने मेरा हाथ पकड़ लिया और तीसरा... मैं उम्मीद कर रहा था कि गर्दन पकड़ेगा, लेकिन नहीं पकड़ी। एक सिपाही ने पूछा, "फोटो... फोटो..." मैंने कहा, "यस..."

दूसरा मुझे खींचने लगा। खैर, वे मुझे एक बड़ी-सी इमारत में ले गए। फारसी में नाम वगैरह लिखा था जो मैं पढ नहीं सका। पर सुरक्षा इन्तज़ाम देखकर पता चला कि कोई संवेदनशील किस्म की इमारत है।

मैं एक कमरे में ले जाया गया जहाँ चार-पाँच लोगों ने मुझे घेर लिया। उनमें से दो अँग्रेज़ी बोल रहे थे। एक ने कहा, "आपने हमारे

ऑफिस की फोटो ली हैं जो वर्जित है।" मैंने कहा, "नहीं।" उसने कहा, "नहीं... ली हैं।" सिपाहियों ने मेरा कैमरा उस आदमी को दे दिया।

तीसरा बोला, "आप कौन हैं? कहाँ से आए हैं? यहाँ क्या कर रहे है?"

मैंने बताया कि मैं कौन हूँ, कहाँ से आया हूँ और कोई आधा दर्जन ईरानी शहर देख चुका हूँ।

एक ने कहा, "हम आपके सामान की तलाशी लेंगे।" नहीं कहने का तो कोई सवाल ही नहीं था। मैंने कहा, "ठीक है ले लें।" अब मेरे सामने बैग से एक-एक चीज़ निकाली जाने लगी। मेरा पासपोर्ट, टिकट लेकर एक अधिकारी किसी और कमरे में चला गया।

सामान की तलाशी में मेरे नोट्स मिले। होता यह था कि अगर कहीं मुझे जाना होता था तो ईरानी मित्र हाथ से कागज़ पर नक्शा बनाकर मुझे दे देते थे। ये नक्शे मेरी मुसीबत बन गए। मुझसे पूछा गया कि यह क्या है? किसने बनाए हैं? क्यों बनाए हैं?

कुछ देर बाद एक अधिकारी मेरा पासपोर्ट लेकर आया और कहा कि आपका वीज़ा तो खत्म हो चुका है। आप यहाँ गैरकानूनी तौर पर रह रहे हैं। मैंने कहा, "श्रीमान जी यह छह महीने का वीज़ा है। आप ध्यान से देखें।"

इस बीच एक अधिकारी मेरा कैमरा लेकर आया और कहा कि मैं कैमरा खोलूँ और फिल्म खींचकर बाहर निकाल दूँ। मैंने उसे समझाने की कोशिश की कि इस कैमरे में ऐसा नहीं हो सकता। मैं लैंस के सामने हाथ लगाकर पूरी फिल्म खींच लूँगा और रोल दे दूँगा।

अधिकारी ज़िद करने लगा कि नहीं मैं कैमरा खोलकर फिल्म ज़ोर से खींचूँ। मेरे ख्याल से यह दृश्य उसने सन् पचास-साठ के आसपास बनी किसी हॉलीवुड फिल्म में देखा होगा और चाहता था कि वह सीन उसके सामने "रिपीट" हो। मेरे बहुत समझाने पर वह तैयार हुआ। मैं लैंस के सामने हाथ

लगाकर क्लिक करता रहा और फिर फिल्म निकालकर दे दी। मेरे सामान की तलाशी जारी थी। मिट्टी का वह टुकड़ा भी निकाला गया जो खाफ से मैंने उठाया। उस पर भी पूछताछ हुई। पूछा गया कि क्या यह पवित्र स्थान मशहद की मिट्टी है? मैंने कहा, "नहीं। ये खाफ की मिट्टी है।" तलाशी में इमामों की तस्वीरें भी निकली जो मैंने मशहद से खरीदी थीं। ये सब हो ही रहा था कि एक अधिकारी आया और बोला कि मैंने जिन शहरों की यात्राएँ की हैं वहाँ मैं कहाँ-कहाँ रहा था? सौभाग्य से मुसाफिरखानों के कार्ड मेरे पास थे। वे मैंने दिखाए।...

...मुझसे पूछा गया कि मैं तेहरान में कहाँ ठहरा हुआ हूँ। मैंने अपने राहुल का नाम और फोन नम्बर दिया। वहाँ फोन किया गया। राहुल घबरा गए। उन्होंने भारतीय दूतावास फोन कर दिया कि मैं गिरफ्तार कर लिया गया हूँ। करीब डेढ़ घण्टे की तलाशी के बाद एक अधिकारी आए और बोले, "क्षमा करें। हमसे गलती हो गई है। आप तो 'हमारे' ही आदमी हैं।"

मुझे बाइज़्ज़त रिहा कर दिया गया। लेकिन मैं उनका गिरफ्तार तो था भी नहीं। मैं तो ईरान की गिरफ्त में था... वहाँ से कैसे "रिहा" हो सकता था।

रोटियाँ

मैं पहले ही तय कर चुका था ईरान से और कुछ ले जाऊँ या न जाऊँ रोटियाँ ज़रूर ले जाऊँगा। उसी तरह जैसे लखनऊ से चाहे कुछ ले जाऊँ या न ले जाऊँ शीरमाल ज़रूर ले जाता हूँ बहरहाल रोटियों की अलग-अलग दुकानें हैं। मतलब एक दुकान में एक तरह की रोटियाँ मिलती हैं तो दूसरी में दूसरी तरह की। इस तरह हर प्रकार की रोटियाँ जमा करने के लिए कई दुकानों के चक्कर लगाने थे। सामान में पाँच-छह किलो वज़न बढ़ाने की गुंजाइश थी।

दो दिन मैं रोटियाँ जमा करता रहा। मीठी और नमकीन रोटी। मुरब्बा भरी रोटी। सूखी और जौ के आटे और साग की रोटी। खड़खड़ाती पतली चपाती जैसी

रोटी, मोटी सूखी रोटी, तीन फुट लम्बी नरम रोटी। छोटी बिस्कुट जैसी रोटी, पतली नरम चपाती जैसी रोटी और पता नहीं कैसी-कैसी रोटियों से एक बड़ा-सा थैला भर गया था।

चलते तो अच्छा था!
लेखकः असगर वज़ाहत
प्रकाशकः राजकमल प्रकाशक
मूल्यः 75 रुपए

चित्रः साभार इंटरनेट